समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/-

# महाकौशल-संदेश

वर्ष:- 17 पृष्ठ:- 4 अंक :- **16** संपादक :- डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र-पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

# चीन की घौंस – बन्दर धुड़की से ज्यादा कुछ नही

**—— डॉ. किशन कछवाहा**

हेकड़ी, तिकड़म और धींगामस्ती का सहारा लेने वाला चीन इस बात को भली भॉति जानता है कि भारत उसके लियें विश्व का सबसे बड़ा बाजार है, इसे छोड़ने का वह विचार भी नही कर सकता लेकिन उसके भविष्य के सपनों को चमनाचूर करता आत्मनिर्भर होता भारत का भविष्य उसकी एक बड़ी बेचैनी का कारण भी है। इस नजरिये से उस के आक्रोश और चालबाजियों को समझा जाना चाहिये। भारतीय प्रधानमंत्री का अमरीका दौरा और वहॉ हुआ भव्य स्वागत तथा सयुक्त बयान में बुनियादी ढ़ांचे के पारदर्शी विकास और संप्रभुता व क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान के आव्हान से उसके पैरों के नीचे की जमीन खिसकती नजर आने लगी है। उसकी वन वेल्ट सव रोड योजना में पारदर्शिता का पूर्णतः अभाव है। गिलगिट-वाल्टिस्तान न तो पाकिस्तान का हिस्सा है, न ही चीन का। यह एक अकेला मामला नही है। भारत और जापान द्वारा अफ्रीका देशों के व्यापक हित में एशिया – अफ्रीका विकास गलियारा की सहमति से भी उसकी सांसे उखड़ी-उखड़ी सी हैं। क्योंकि उसका परिणाम और ओ.वी.आ. आर. का भविष्य दॉव पर है। चीन इसे एक बड़े आर्थिक दॉव के रूप में संकित भाव से देख रहा है। मोदी सरकार रूस, अमेरिका इजराईल और यूरोप के अनेक देशों से नजदीकियॉ बढ़ाने में सफल रही है। ये नजदीकियॉ उसकी परेशानी की बड़ा कारण है। चीन कभी युद्ध की चाह नही रख सकता यदि वह परास्त हो गया और अंदर तक घुस नही पाया तो उसकी कलई खुल जायगी इसीलिये उसकी घमकियॉ सिवाय बन्दर घुड़की से ज्यादा कुछ अधिाक नही हैं। इसके अलावा उसे अंतर राष्ट्रीय विरादरी का भी डर है, भरत की परमाणु क्षमता को भी वह नजर अंदाज नही कर सकता। फिर भी भारत को उसकी घोखाबाजी और फरेबी चालों से सावधान रह कर उसकी चुनौती को स्वीकार करने की जरूरत है। वह तनाव बढ़ाने को सदा उत्सुक रहता है जिससे भारत उसकी घौंस में आकर उसकी हेकड़ी के सामने झुक जाय। डोमलौग की ढिठाई उसका एक उदाहरण है। सन् 62 में चीन ने भारत-चीनी भाई-भाई के नारे और पंचशील के सिद्धातों को रौंदा, भारत के साथ विश्वासघात करते हुये हमला कर दिया, सन् 13-14 में जब चीनी राष्ट्रपति भारत में दोस्ती को मजबूत करने आये, तभी चीनी सेना लद्दाख के चूमर क्षेत्र में घुस आयी और अपना कब्जा जमाने की कोशिश करने लगी। चीन लगातार ऐसे प्रयास करता रहता है, वह भी सुनियोजित तरीके से जिससे भारत की उत्तरी सीमा पर लगातार विवाद और तनाव बना रहें। गत 1 जून को भारतीय सेना से डोकालां के लालटेन में सन् 2012 में स्थापित दो बंकरों को हटाने कहा गया था जो थंभी घाटी के पास और भारत- भूटान-तिब्बत ट्राईजेक्शन के कौने में पड़ते हैं। चीन ने इन दो बंकरों को बुलडोजरो से तबाह कर दिया था। कई वर्षो से इस क्षेत्र में गश्त कर रही भारतीय सेना ने सन् 2012 में फैसला किया था कि यहॉ भूटान-चीन सीमा पर सुरक्षा के तहत बंदोवस्त करने के लिये साथ ही पीछे से मदद के लिये बंकरों को तैयार रखा जायगा। डोकाला में पहलीं बार इस तरह की घुसपैठ नही हुयी है। चीन के सैनिकों ने नवम्बर 2008 में भी यहॉ भारतीय सेना के कुछ अस्थायी बंकरो को नष्ट्र कर दिया था। रक्षाविशेषज्ञों का मानना है कि चीन थॅबी घाटी पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है जो तिब्बत के दक्षिणी हिस्से में है। डोकाला इलाके पर दावा जताकर चीन अपनी भौगोलिक स्थिति को व्यापक बनाना चाह रहा है ताकि वह भारत-भूटान सीमा पर सभी गतिविधियों पर निगरानी रख सके। भारत किसी भी हालत में भूटान को अकेला छोड़ नही सकता। संभवतः चीन इस बात की भी परीक्षा लेना चाह रहा है कि भारत मित्र देशों के साथ किस सीमा तक खड़ा रह सकता है ? भूटान भारत का मित्र है और भारत भूटान के बीच सुरक्षा समझौता भी है। भूटान का सवाल नही है। भरत भविष्य में अपने सभी मित्र देशों, वियत नाम फिलीपींस, ताईवान आदि के साथ भी खड़ा रहेगा। भारत की यह दृढ़ता विश्व में असर डालेगी । नेपाल, मालद्वीप, श्री लंका, बांगलादेश व म्यॉमार आदि भी ऐसे देश है जो चीन को पंसद नही करते। लेकिन निवेश के कारण उसके जाल में फॅस गये हैं। चीन को भी यही आशंका है कि अगर ये देश चीन के चंगुल से या दबाव में आने से इंकार करेंगे तो भारत उनके साथ खड़ा हो जायेगा। भारत की यही दृढ़ता उन्हें चीन के चंगुल से बाहर भी निकालेगी। इस दृढ़ता का व्यापक असर होगा जिसका असर चीन के विरोधी देशों जापान और दक्षिणी कोरिया पर भी होगा। उसके पिट्ठू पाकिस्तान की छटपटाहट तो इन दिनों देखने लायक है। भारत भी परमाणु ताकत वाला देश है। भले ही उसकी क्षमता चीन के बराबर न हो। लेकिन दुनिया के सामने जब दो परमाणु ताकतों के बीच टकराहट सामने आयेगी तब क्या पूरी दुनिया सक्रिय नही हो जायगी फिर अन्य देश उसके खिलाफ होंगे जो युद्ध की पहल करेगा। भारत तो अपनी तरफ से पहल करेगा नहीं। दूसरे भारत -चीन का व्यापार भी युद्ध नही होने देगा। क्योंकि उसके बाद व्यापार का रिश्ता बिल्कुल समाप्त हो जायगा जिसका असर चीन की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। भारत की दृट्ता से यह संकेत भी जा रहा है कि इस बार न तो कदम पीछे हटेंगे और न ही दबाब बनाने की राजनीति के सामने झुकेंगे। सन् 62 में चीन ने पंचशील के सिद्धान्तों को तोड़ा, भरत-चीनी भाई – भाई के नारे को झुठलाया और भारत की पीठ पर खंजर भौंका-उसे भारत कभी भी नही भुला पायेगी। भारत को चीन से ऐसे विश्वासघात की उम्मीद नही थी। वर्तमान विवाद के चलते भारतके सख्त रवैयें से चीन परेशान हो उठा है जिसके कारण उसकी बौखलाहट और चीनी मीडिया की गीदड़ भमकी से समझा जा सकता है। इसी तनातनी के बीच बंगाल की खाड़ी में 10 जुलाई से भारत के साथ अमरीका और जापान मालावार युद्धाभ्यास में भाग लेने जा रहे हैं। इसमें सभी देशों ने अपनी टाप टीमें इस अभियान में शामिल होने

## रथ यात्रा में सहयोग करते स्वयं सेवक

गत दिनों जगन्नाथ पुरी की विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने उत्कल विप्पन सहायता समिति के साथ मिलकर यात्रा में सहभागी भक्तजनों को प्राथमिक चिकित्सा से लेकर, एंबुलेंस, पीने का पानी एवं यातायात प्रबंधन सहित विभिन्न कार्यो में लगकर सेवाकार्य करने का दायित्व निभाया। इस दौरान संघ के वरिष्ठ अधिकारी एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

# एक जैसे है दिल्ली और मुरैना के 'संसद भवन'

मध्य प्रदेश के मुरैना के पास मितावली गॉव में चम्बल की संसद हैं जो आकार प्रकार में भारतीय संसद जैसी हैं । चम्बल के बीहड़ों में बना यह सन्सद भवन बारह सौ साल पहले बना था, जबकि दिल्ली के सन्सद भवन की ड़िजाइन चम्बल की सन्सद को देखकर बनाई गयी थी। मुरैना से लगभग 20–22 कि,मी, दूर जमीन से तीन सौ फीट की उँचाई पर बनी यह स'न्सद वास्तव में चौसठ योगिनी मन्दिर हैं। गोलाकार भवन में 64 मन्दिर बने हैं। जिनमें भगवान शिव शंकर के साथ प्रत्येक योगिनी की प्रतिमा थी। मध्य में शिव जी का भव्य मन्दिर हैं। इतिहासकार बताते हैं कि यह विशाल मन्दिर तन्त्र का विश्वविद्यालय था और पूरी दुनिया के लोग यहॉ तन्त्र विद्या सीखने यहॉ आते थे। प्रतिहार वन्श के राजाओं ने यह मन्दिर बनवाया था। आज भी देश और विदेश के लोग यहॉ तन्त्र विद्या सीखने आते है इसी मन्दिर से कुछ दूरी पर कनमठ मन्दिर हैं। जो एक रात में बनकर तैयार हुआ था। जिसे रानी कनकावती ने बनवाया था।यह सुहानिया गॉव के पास स्थित हैं। इस मन्दिर की यह विशेषता हैं कि इस मन्दिर में लगे स्तंभों की सही–सही गिनती कोई व्यक्ति नही कर सकता हैं। इसके और आंगे नरेश्वर मन्दिर हैं। यह भी बीहड़ो और पथरीले रास्तों के बीच बना हैं। महादेव का यह मन्दिर वीरान लगता हैं, किन्तु इक्का– दुक्का यहॉ साधना करते दिख जाते हैं। गुप्त–नवरात्रों में तिब्बत, जापान, थाईलैण्ड़, म्यांमार, चीन आदि देशें सहित भारत के दसियों साधक यहॉ साधना के लिये जुट जाते हैं। चंबल की संसद प्रमाण कि अन्य विद्याओं की तरह भवन निर्माण कला में भी भारत के शिल्पी सबसे आगे थे। उँचे पहाड़ों पर बने सिंहगढ जैसै दुर्ग भी इसकी पुष्टि करते हैं।

# उच्छृंखलता.....में तब्दील होती अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता

## अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में दुश्मन देश के एजेंडे का प्रचार

बरसों पुरानी बेड़ियां तोड़ आज देश प्रखर राष्ट्रियता के रथ पर सवार होकर एक नये भविष्य की ओर बड़ रहा हैं। ऐसे में बरसो से राष्ट्रवाद के अवरोधक रहे नित नये अवरोध खड़े कर रहे हैं। यह घोर अराष्ट्रवादी तत्व जिनमे वामपंथी सबसे ऊपर हैं। संवैधानिक अधिकारों की दुहाई दे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर धातक खेल खेलने में उतर आये है, जिसके अंतर्गत वह दुश्मन देश के एजेंड़े का प्रचार करने से भी गुरेज नही कर रहे हैं। दिल्ली स्थित जेएनयू में क्या हुआ, सारा देश देख चुका हैं। कैसे वामपंथी छात्र संगठनों ने कश्मीरी अलगावादियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर 'भारत तेरे टुकड़े होंगे हजार' जैसै नारे लगाये। अफजल गुरू की फॉसी की खुलेआम मज्जमत की गई। कैसै जेएनयू पथभ्रष्ट इन छात्रों भारत राष्ट्र–राज्य के प्रति नफरत भर रहे हैं यह किसी से छुपा नही हैं। जेएनयू की प्रोफेसर निवेदिता मेनन किस प्रकार भारत का मखौल उड़ाती हैं और कैम्पस में आयोजित सभा में खुलेआम कहती हैं कि – भारतीय सेना ने कश्मीर में अवैध रूप Pakistan did not kill my father War did. मेरे पिता को पाकिस्तान ने नही ,युद्ध ने मारा हैं। सुप्रीम कोर्ट के एक वकील प्रशांत भूषण एक ट्विट लिखते हैं जिसमे भगवान श्री कृष्ण को सबसे बड़ा रोमियों बताया हैं। बाद में जब विरोध होता हैं, तो अपना टिविट् हटा लिया जाता हैं। मगर सोचने वाली बात यह हैं कि सब कुछ अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की आड़ में हो रहा हैं। हालाकि सविधान के जिस अनुच्छेद 19 के अंतर्गत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित की गई हैं। उसी की उपधारा 2 में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मर्यादा में बांधा गया हैं। अगर आपकी अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता के चलते निम्नलिखित स्थिति पैदा होती हैं तो इस अधिकार को प्रतिबंधित किया जा सकता हैं–

1. Security of the state (राष्ट्र की सुरक्षा के मद्देनजर)
2. Friendly relation with foreign States (अन्य राज्यों से द्विपक्षीय संबंधों के मद्देनजर)
3. Public order (कानून व जनव्यवस्था के मद्देनजर)
4. decency and morality (शालीनता और नैतिकता के मद्देनजर)
5. contempt of court (नयायालय की अवमानना के मद्देनजर)
6. Defarmation (मानहानि के मद्देनजर)
7. Incitempent to an offence (अपराध इत्यादि के उकसावे के मद्देनजर)
8. Sovereignty and integrity of India (भारत की अखण्ड़ता के मद्देनजर)

आज के बदले हुये परिवेश में इस बात की जरूरत हैं कि हर जागरूक नागरिक भारतीय न सिर्फ अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता मर्यादा की रेखा को समझे बल्कि इसका उल्लघन करने वालो को समझाये कि कहॉ उनकी स्वतन्त्रता उच्छृंखलता में तब्दील हो रही हैं। मीड़िया को भी सजग रहते हुये ऐसे लोगो को आड़े हाथो में लेना चाहिये जो देश, धर्म और संस्कृति पर अर्नगल टिप्पणियॉ कर खबरों में बना रहना चाहते हैं। यहॉ तक कि ऐसे लोगों का जो अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता के नाम पर दुश्मन देश का एजेण्ड़ा लागू करने में लगे हुये हैं न सिर्फ सामाजिक बहिष्कार हो बल्कि सख्त कानूनी कारवाई भी सुनिश्चित की जाये, तभी इस सिलसिले में लगाम लगायी जा सकती हैं।

— अम्बरीश पाठक

# आचार्य सुश्रुत

सुश्रुत प्राचीन भारत के एक महान् चिकित्सा शास्त्री एवम् शल्य चिकित्सक थे। उनको शल्य चिकित्सक का जनक माना जाता हैं। 'शल्य' शब्द का अर्थ हैं शरीर की पीड़ा । इस पीडा़ का निवारण करना शल्य किया कहलाती हैं। अन्ग्रेजी में इसे सर्जरी अथवा ऑपरेशपन भी कहते हैं। महर्षि सुश्रुत ही वे प्रथम शल्य चिकित्सक थे जिन्होने शल्य क्रिया को केवल व्यवस्थित एवं परिवकृत रूप प्रदान नही किया अपितु असख्य मनुष्यो को उनके कष्टो से मुक्ति दिलायी। अधिकांश विद्वानों ने सुश्रुत को विश्वामित्र का वंशज माना है, जिसका जन्म 600 ईसा पूर्व हुआ था ये काशी में जन्मे थे और वहीं पर महर्षि धन्वंतरि के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की थी। शल्य चिकित्सा के आदि ग्रंथ का नाम 'सुश्रुत संहिता' है। इसमें धन्वंतरि के उपदेशों का संग्रह किया था, इसलिये इसे सुश्रुत संहिता के नाम से जाना गया। विक्रम संवत् 57 के आसपास सुप्रसिद्ध रसायनवेता नागार्जनु ने इसे पुनः सम्पादित कर नया स्वरूप प्रदान किया। 'सुश्रुत संहिता' मुख्य रूप से पाँच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में 46 अध्याय, द्वितीय खण्ड में 16, तृतीय में 10, चतुर्थ में 40 एवं पंचम खण्ड में 8 अध्याय है। इस प्रकार सुश्रुत संहिता में कुल 120 अध्याय हैं। इन अध्यायों के अतिरिक्त सुश्रुत संहिता में एक परिशिष्ट खण्ड भी हैं। इस खण्ड के अन्तर्गत 66 अध्यायों में काय–चिकित्सा का वर्णन किया गया (औषधियों के द्वारा उपचार की विधि काय–चिकित्सा के नाम से जानी जाती हैं।) इस तरह यदि शल्य चिकित्सा के सभी अध्यायो को जोड़ दिया जाये तो सुश्रुत संहिता 186 अध्यायों वाले एक वृहद ग्रन्थ के रूप में हमारे सामने आता है। सुश्रुत सन्हिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया हैं। शल्य क्रिया में सुश्रुत 125 तरह के औजारों का प्रयोग करते थे। उन्होने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियायों की खोज की। सुश्रुत सन्हिता में मोतिया बिन्द के ऑपरेशन की विधि को विस्तार से समझाया गया हैं। उन्हे शल्य क्रिया द्वारा प्रसव कराने का ज्ञान था। सुश्रत को टूटी हड्डियों को जोड़ने, मूत्र नलिका में पाई जाने वाली पथरी निकालने में भी दक्षता प्राप्त थी। उन्हें मधुमेह व मोटापे के रोग की भी विशेष जानकारी थी। शल्य क्रिया करने से पहले वे औजारों को गर्म करते थे, जिससे औजारों में लगे कीटाणु नष्ट हो जायें। शल्य क्रिया के दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिये विशेष प्रकार की औषधियाँ भी देते थे। यह क्रिया संज्ञा हरण (Anaesthesia) के नाम से जानी जाती है। सुश्रुत को प्लास्टिक सर्जरी का पिता भी माना जाता है। सुश्रुत संहिता में अनेकों जगह नाक, कान और होठ की प्लास्टिक सर्जरी का जिक्र मिलता है। इस प्रकार प्लास्टिक सर्जरी भारत से शुरू होकर अरबों के माध्यम से शेष विश्व में पहुँची। सुश्रुत संहिता का सबसे पहला अनुवाद आठवीं शताब्दी में अरबी भाषा में हुआ था, जो कि 'किताब ए सुसरूद' के रूप में काफी प्रसिद्ध हुई। महर्षि सुश्रुत श्रेष्ठ शल्य चिकित्सक होने के साथ–साथ एक योग्य आचार्य भी थे। उन्होंने शल्य चिकित्सा के प्रचार–प्रसार के लिये अनेकों शिष्यों को शल्य चिकित्सा के सिद्धांत बताए। वे अपने शिष्यों को शल्य चिकित्सा का ज्ञान देने के लिये प्रारम्भिक अवस्था में फूलों, सब्जियों और मोम के पुतलों का उपयोग करते थे। उनका विचार था कि चिकित्सक को सैद्धांतिक एवं पुसतकीम ज्ञान के साथ–साथ प्रयोगात्क ज्ञान में भी प्रवीण होना चाहिए। मानव शरीर की अंदरूनी रचना को समझाने के लिये सुश्रुत मुर्दे के नाजुक अंगो की शल्य क्रिया का प्रदर्शन करते व बाद में छात्रों से भी वही अभ्यास करवाते थे। इन्होने शल्य चिकित्सा के साथ–साथ आयुर्वेद के अन्य पक्षों जैसे–शरीर संरचना,बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग इत्यादि के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। आचार्य सुश्रुत का नाम आधुनिक भारतीय चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्रों में आज भी विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। साथ ही पूरे विश्व को भारतीय चिकित्सा विज्ञान के गूढ़ ज्ञान से लाभान्वित करने में उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा

## सऊदी अरब के विद्वान ने कहा

# दुनिया को सहिष्णुता भारत से सीखनी चाहिये

**खलफ अल हरबी सऊदी अरब के जाने–माने विद्वान और लेखक हैं। सऊदी समाचार पत्रों में उनके लिखे लेख पूरी दुनिया में चर्चित हैं। पिछले दिनों सऊदी गजट समाचार पत्रों मे उनके लिखे एक लेख में उन्होने भारत की प्रशन्सा की हैं। जो कि इस प्रकार हैं–**

**भारत में सौ से अधिक मजहव हैं और इतनी ही भाषाए हैं। फिर भी भारत में लोग शान्ति और सद्भाव से रहते हैं। सबके सब भारत को सशक्त राष्ट्र बनाने के लिये एकजुट हैं और सुई से लेकर रॉकेट तक अपने देश में बनाते हैं।**

**इसी के साथ वे मंगल पर जाने की तैयारी कर रहे हैं। मुझेकई बार भारत से ईर्ष्या होती हैं, क्योकि मैं दुनिया के जिस हिस्से से हूँ वहॉ एक भाषा हैं और एक ही मजहव हैं फिर भी खूब मार–काट होती है। दुनिया सहिष्णुता के सम्बन्ध में कुछ भी बोले, पर भारत ही विश्व का सबसे प्राचीन और सबसे महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ से सहिष्णुता और सह–अस्तित्व का पाठ सीखा जा सकता है।**

# ब्रह्म हैं गुरू

भारतभूमि के कण–कण में चैतन्य स्पन्दन विद्यमान हैं। पर्वों,त्यौहारो और संस्कारों की जीवंत परम्पराये इसको प्राणवान बनाती हैं। तत्वदर्शी ऋषियों की इस जाग्रत धरा का ऐसा ही एक पााावन पर्व है। गुरू पूर्णिमा। हमारे यहॉ 'अखंड मंडलाकारं व्याप्तंयेन चराचरं.....तस्मै श्री गुरूवे नमः' कह कर गुरू की अभ्यर्थना एक चिरतंन सत्ता के रूप में गई। भारत की सनातन संस्कृति में गुरू को परम भाव माना गया हैं जो कभी नष्ट नही हो सकता हैं। इसलिये गुरू को व्यक्ति नही अपितु विचार की संज्ञा दी गई हैं। इसी दिव्य भााव ने हमारे राष्ट्र को जगदगुरू की पद्वी से विभूषित किया । गुरू कों नमन का ही पावन पर्व हैं गुरू पूर्णिमा (आषाण पूर्णिमा)।

## ज्ञान दीप हैं सद्गुरू

गुरू' स्वयं में पूर्ण हैं जो खुद पूरा हैं वही तो दूसरो को पूर्णता का बोध करवा सकता है।

हमारे अंतस में संस्कारों का परिशोधन गुणों का संवर्द्धन एवं दुर्भावनाओं का

विनाश करके गुरू हमारे जीवन को सन्मार्ग पर ले जाता है। गुरू कौन व कैसा हो, इस विषय में श्रुति बहुत सुंदर व्याख्या करती है–'विशारदं ब्रहानिष्ठं श्रोत्रियं..... अथार्त् जो ज्ञानी हो, शब्द ब्रह्म का ज्ञाता हो, आचरण से श्रेष्ठ ब्राह्मण जैसा और ब्रह्म में निवास करने वाला हो तथा अपनी शरण में आये शिष्य को स्वयं के समान सामर्थ्यवान बनाने की क्षमता रखता हो। वही गुरू है। जगद्गुरू आद्य शंकराचार्य की 'शतश्लोकी' के पहले श्लोक में सदगुरू की परिभाषा है–तीनों लोकों में सद्गुरू की उपमा किसी से नही दी जा सकती। बौद्ध ग्रंथो के अनुसार भगवान बुद्ध के अनुसार भगवान बुद्ध ने सारनाथ में आषाढ़ पूर्णिमा के दिन अपने प्रथम पांच शिष्या को उपदेश दिया था। इसीलिए बौद्ध धर्म के अनुयायी भी पूरी श्रद्धा से गुरू पूर्णिमा उत्सव मनाते हैं। सिख इतिहास में गुरूओं का विशेष स्थान रहा है। जरूरी नहीं कि किसी देहधारी को ही गुरू माना जाये। मन में सच्ची लगन एवं श्रद्धा हो तो गुरू को किसी भी रूप में पाया जा सकता है। एकलव्य ने मिट्टी की प्रतिमा में गुरू को ढूंढा और महान धनुर्धर बना दत्तात्रेय महाराज ने 24 गुरू बनाये थे। गुरू शब्द का महत्व इसके अक्षरों में ही निहित है। देववाणी संस्कृत में 'गु' का अर्थ होता है अंधकार (अज्ञान) और 'र' का अर्थ होता हटाने वाला। यानी जो अज्ञान के अंधकार से मुक्ति दिलाये वह ही गुरू है। माता–पिता हमारे जीवन के प्रथम गुरू होते हैं। प्राचीनकाल में शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरूकुलों की व्यवस्था थी। आज उनके स्थान पर स्कूल–कॉलेज हैं।

## अनुपम धरोहरः गुरू–शिष्य परम्परा

गुरू–शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति की ऐसी अनुपम धरोहर है जिसकी मिसाल दुनियाभर में दी जाती है। यही परम्परा आदिकाल से ज्ञान संपदा का संरक्षण करती आयी

है। गुरू–शिष्य के महान संबधों एवं समर्पण भाव से अपने अहंकार को गलाकर गुरू कृपा प्राप्त करने के तमाम विवरण हमारे शास्त्रों में हैं। कठोपनिषद् में पंचाग्नि विद्या के रूप में व्याख्यायित यम–नचिकेता का पारस्परिक संवाद गुरू–शिष्य परम्परा का विलक्षण उदाहरण है।

# भगवा ध्वज है भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक

चाणक्य जैसे गुरू ने चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया और समर्थ गुरू रामदास ने छत्रपति शिवाजी के भीतर बर्बर मुस्लिम आक्रमणकारियों से राष्ट्र रक्षा की सामर्थ्य विकसित की। मगर इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि बीती सदी में हमारी गौरवशाली गुरू–शिष्य परंपरा में कई विसंगतियां आ गयीं। इस परिवर्तन को लक्षित करते हुंए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के समय भगवा ध्वज को गुरू के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके पीछे मूल भाव यह था कि व्यक्ति पतित हो सकता है पर विचार और पावन प्रतीक नहीं। विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन गुरू–रूप में इसी भगवा ध्वज को नमन करता है। गुरू पूर्णिमा के दिन संघ के स्वयंसेवक गुरू दक्षिणा के रूप में इसी भगवा ध्वज के समक्ष राष्ट्र के प्रति अपना समर्पण व श्रद्धा निवेदित करते हैं। उल्लेखनीय है कि इस भगवा ध्वज को गुरू की मान्यता यूं ही नही मिली है। यह ध्वज तपोमय व ज्ञाननिष्ठ भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक सशक्त व पुरातन प्रतीक हैं । उगते हुये सूर्य के समान इसका भगवा रंग भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक ऊर्जा, पराक्रमी परंपरा एवं विजय भाव का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक है। संघ ने उसी परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरू के प्रतीक रूप में स्वीकार किया है जो कि हजारों वर्षो से राष्ट्र और धर्म का ध्वज था।

# ये शांति के दुश्मन कौन ?

देश की सीमाओं पर जहॉ पाक और चीन जैसे कुटिल पड़ोसी हरक्षण नुकसान पहुॅचाने और देश के भीतर, सीमा पर अशान्ति फैलाने के प्रयास में रहते ही हैं। वही देश के भीतर भी कतिपय उनके पिट्ठू देश का माहौल बिगाड़ने से नही चूकते। साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने की कोशिशें होती है ताकि अशांति विद्वेष, विघटन और विद्रोह के बीज बोये जा सकें। कुछ ऐसे भी स्वार्थी तत्व हैं, जो समाज के दुश्मन बन बैठे हैं। सहारनपुर और पश्चिम उत्तरप्रदेश की घटनायें इसके उदाहरण है जिसमें हिन्दू समाज को निशाना बनाया गया। इसमें कुछ राजनीति से जुड़े हुये लोग भी हैं जो अपने कुछ स्वार्थों के लिये किसी को भी बलि का बकरा बनाने से नही चूकते। ये तत्व अपनी राजनीति चमकाने के लिये किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। ऐसे उन्मादियों को चिन्हित कर कड़ी कार्यवाही होना चाहिये।

### सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com